

सेवापरायणा श्रीस्वामिनी

सातवाँ प्रेमी- (पृथ्वी पर मस्तक टेक कर) प्राण प्यारे बाबुल ! श्रीगुरुसाहब के मन्दिर में मस्तक झुकाकर सत्संग में जाकर बैठा । वहाँ यह कथा हो रही थी- “महारानी श्रीजनक-नन्दिनी अपने वनवासी प्राणनाथ की सेवा करके उन्हें किस प्रकार सुख पहुँचा रही हैं ? उन्होंने प्रियतम के आनन्द के लिये पर्णकुटीर के चारों ओर गमलों की सुन्दर फुलवारी बनवायी है । वे स्वयं अपने हाथों गोदावरी से जल के कलश भर-भरकर उन्हें सींचती हैं- अपने प्रियतम के विराजमान होने के लिये गोबर से लिपी पुती स्वच्छ वेदिका बनायी है । यह सुनकर मेरा मन बहुत व्याकुल हुआ कहाँ तो साकेतनाथ की प्राणेश्वरी प्राण-वल्लभ अत्यन्त सुकुमारी श्री श्रीजू अम्बा और कहाँ यह वन-वासी जीवन ! मँझली माँ पर बड़ा क्रोध आने लगा । फिर कथा में सुना कि श्रीमहारानीजी वहाँ वृक्षों की छाया में पक्षियों के चुगने के लिये वन का धान्य बिखेर देतीं और उन के वात्सल्य स्नेह में बँधे हुए पक्षी पर्णकुटीर के आसपास की वृक्षावली छोड़कर कहीं नहीं जाते थे । महारानी श्रीजू सर्वदा उन्हें प्रभु के चरित्र और गुण की मधुर पदावली पढ़ाती रहतीं । लाड़ले लक्ष्मण प्रातःकाल खुरपा, कुदाल लेकर कन्द-मूल फल लेने के लियु चले जाते । प्यारे राघवेन्द्र गोदावरी के पावन पुलिन पर ठण्डी, धीमी एवं सुगन्धितवायु लेने के लिये टहलते । उस समय श्रीस्वामिनीजू बड़े प्रेम और सावधानी से पर्णकुटी को साफ करके कोमल-कोमल

गुलाबी कोंपलों का आसन बनाती रहतीं । उधर श्रीरामचन्द्र को दात्यूह पक्षी की -“पुत्र, पुत्र” यह करुण पुकार सुनकर अपनी स्नेहमयी वृद्धा जननी की मधुर स्मृति हो आयी और वे व्याकुल होकर मन-ही-मन कहने लगे-“हाय ! हाय ! मेरी मैया को तो मेरे जन्म से जितना सुख हुआ । उससे हजारगुना तो मेरे वियोग से दुःख ही हुआ । मैंने तो उनकी कोई सेवा नहीं की । कोई हित नहीं किया । मुझसे अच्छा तो मैया का पाला वह शुक पक्षी भी है जो अपने साथियों से कहता था कि मैया को दुःख पहुँचाने वाले शत्रुओंकी जीभ काट दो ।” प्रभुके नेत्रोंसे आँसू झलक पड़े । वे घबड़ाकर पर्णकुटीकी वेदिकापर आ बैठे । उस समय श्रीजू-महाराज के सिखाये हुए विहंगों ने मधुर-मधुर कलरव से पद गा-गाकर उन्हें प्रसन्न किया । अपनी प्रियतमा की यह शिक्षा कुशलता देखकर अनुराग में भर गये और श्रीप्रियाजी की ओर देखने लगे । प्रिया-प्रियतम की प्रसन्नता, आनन्द और अनुराग देखकर मैं मग्न हो गया । ध्यान जम गया । मैंने देखा कि श्रीस्वामिनीजी गोदावरी के तट-पर सुन्दर-सुन्दर रंग-बिरंगे पुष्पों का चयन कर रहीं हैं । झोली भर गयी । गोदावरी जी से कलश में जल भी भर लिया और पर्णकुटी की ओर चलीं । उसी समय श्रीजी का पाला हुआ मृगशावक छलाँग भरता हुआ आ पहुँचा और साड़ी का पल्ला मुख में पकड़कर अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से इशारा करने लगा कि यह जल का कलश मेरी पीठ पर रख दो । मैं ही ले चलूँगा । प्रेमविनोदनी श्री श्रीजू मृगशिशु

के अनुराग से प्रसन्न हो गयीं और अपने कर कमलों से कलश का भारी सम्भालते हुए ही उसकी पीठ रखे-रखे पर्णकुटी के पास आ गयीं । श्रीरघुनन्दनदेवजू दूर से ही यह विनोद देख रहे थे । समीप आने पर हँसकर बोले-“प्यारी जी ! सेवक तो बड़ा अच्छा है । इसका वेतन क्या है ?” श्रीजीमहाराज ने मुस्कराकर कहा-“प्रभु का कृपावलोकन ! आप का दुलार प्राप्त करने के लिये यह सारा भार अपनी पीठ पर ले आया है ।” प्रभु ने आनन्द में भरकर मृगशिशु को अपनी गोद में कर लिया । अपने वल्कल ले उसका शरीर पोंछकर चूम लिया और बोले-“बेटा ! अपनी माँ की सेवा करते हुए सुखी रहो ।”

मैं मन ही मन उस मृगशिशु के भाग्य की साराहना करने लगा और आनन्दमग्न हो गया । उसी समय लक्ष्मणलाल कन्द, मूल, फल लेकर आ गये । युगल सरकार प्रसन्न होकर भोजन करने बैठे । उस समय हमारे प्यारे साईं ऋषिकुमारी के रूपमें हाथोंमें पटिया लिये आ गये और उसपर श्रीजू महाराज के लिखाये हुए संस्कृत श्लोकों को तोतली और मधुर वाणी में गाने लगे । उन श्लोकों को सुनकर युगल सरकार और लक्ष्मणलाल हँस-हँसकर लोटपोट होने लगे ।